शनिवार
शुक्रवार
गुरुवार
बुधवार
मंगलवार
सोमवार

क्या रविवार वास्तव में पवित्र है?

जो क्रू

Copyright © 2004, 2021
by Doug Batchelor

All rights reserved.
Printed in India.

Published by:
Amazing Facts India
Post Box No 51
Banjara Hills, Hyderabad
Telangana, 500034
www.AmazingFactsIndia.org

क्या रविवार वास्तव में पवित्र है?

जो क्रू द्वारा।

विषयसूचीः

1. एक गलत मोड़ 2

2. संकीर्ण सोच और बहुसंख्य नियम 4

3. रविवार को पुनरुत्थान 7

4. सच्चे सब्त का पता लगाना 9

5. यहूदियों के डर से 12

6. कुरिन्थुस में कोई रविवार-पालन नहीं 14

7. पौलुस का सबसे लंबा उपदेश 17

8. यूतुखुस अटारी पर से क्यों गिर पड़ा 21

9. वह दिन जिसका उन्होंने पालन किया 24

अध्याय एकः
एक गलत मोड़

दाऊद की सबसे खूबसूरत प्रार्थनाओं में से एक भजन संहिता 43:3 में दर्ज है। "अपने प्रकाश और अपनी सच्चाई को भेज; वे मेरी अगुवाई करें, वे ही मुझ को तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे निवास स्थान में पहुंचाएँ!" परमेश्वर के वचन को समझने की यही गंभीर याचना सत्य के प्रत्येक सच्चे साधक के हृदय में होनी चाहिए। सीखने और पालन करने की इच्छा उन सभी में होनी चाहिए जो पवित्र आत्मा द्वारा ज्ञान-संपन्न होने की अपेक्षा करते हैं। ऐसा करने के लिए, धन्य का सुंदर वादा पूरा किया जाएगा। "धन्य हैं वे, जो धर्म के भूखे और प्यासे हैं, क्योंकि वे तृप्त किए जाएंगे" (मत्ती 5:6)।

लेकिन यदि परमेश्वर द्वारा हमारी प्रार्थना का उत्तर देने पर उसका पालन करने का हमारा कोई इरादा नहीं है, तो सच्चाई के लिए प्रार्थना करना व्यर्थ है। परमेश्वर हम पर जो सबसे बड़ा उपकार कर सकता है, वह है उसके वचन का ज्ञान देना। और सबसे ढीठ बात जो कोई भी कर सकता है वह है परमेश्वर की इच्छा को समझने के लिए प्रार्थना करना और फिर उत्तर आने पर, किसी भी कारण से, आज्ञा मानने से इंकार करना।

बहुत से लोग वचन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अपने अनुभव को ऊपर लाने के बजाय, अपने निर्गुण, नीरस अनुभव से मेल खाने के लिए बाइबल को नीचे खींचने के दोषी हैं। सत्य की केवल एक बड़ी निर्णायक परीक्षा है, और वह है बाइबल। प्रत्येक

धार्मिक विचार को, प्रत्येक पुस्तक को जिसे हम पढ़ते हैं, और प्रत्येक उपदेश को जो हम सुनते हैं, प्रेरित शास्त्र के अचूक मापक से मापा जाना चाहिए। इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि जब हम बच्चे थे तब हमें क्या सिखाया गया था, या बहुसंख्यक क्या अनुसरण कर रहे हैं, या हमारी भावनाएँ हमें क्या सोचने या विश्वास करने के लिए प्रेरित करती हैं। वे कारक पूर्ण सत्य की परीक्षा के रूप में अमान्य हैं। अंतिम प्रश्न का उत्तर दिया जाना चाहिएः इस विषय पर परमेश्वर का वचन क्या कहता है?

कुछ लोग सोचते हैं कि यदि वे अपने विश्वास में सच्चे हैं, तो परमेश्वर उन्हें स्वीकार करेगा और उन्हें बचाएगा। हालांकि, केवल ईमानदारी ही काफी नहीं है। कोई ईमानदार हो सकता है और सचमुच गलत हो सकता है। मुझे कई साल पहले वेस्ट पाम बीच फ्लोरिडा,पर गाड़ी चलाना याद है। कम से कम मुझे लगा कि मैं वहां जा रहा हूं। रात हो गई थी, और मैंने काफी समय से कोई सड़क चिन्ह नहीं देखा था। अचानक मेरी कार की रोशनी ने एक संकेत उठाया, जिस पर लिखा था, “बेले ग्लेड 14 मील।” जब मुझे एहसास हुआ कि मैं वेस्ट पाम बीच से विपरीत दिशा में यात्रा कर रहा हूं, तो मैं बहुत दुःखी हुआ। मैं गलत रास्ते पर था। उस रात मुझसे ज्यादा ईमानदार कोई नहीं हो सकता था, लेकिन मैं सचमुच गलत था। अब, मैं उसी सड़क पर गाड़ी चलाना जारी रख सकता था-यह कहते हुए कि किसी तरह, कहीं आगे मुझे वेस्ट पाम बीच मिल जाए। इसके बजाय, मैंने कार को घुमाया और वापस उस स्थान पर चला गया जहाँ मैंने गलत मोड़ लिया और वेस्ट पाम बीच की ओर जाने वाली सही सड़क पर पहुँच गया। यही एकमात्र सही काम था।

अध्याय दोः
संकीर्ण सोच और बहुसंख्य नियम

जो लोग सुधारे जाने के इच्छुक हैं, उनके लिए परमेश्वर के वचन में बहुत कुछ है। सबसे अधिक दयनीय वे लोग हैं जिनकी सोच संकीर्ण हैं। वे ऐसी किसी भी जानकारी का विरोध करेंगे जो उनके व्यक्तिगत विचारों से भिन्न हो। उनका दिमाग नियत है, और वे तथ्यों से परेशान नहीं होना चाहते हैं। यह सब्त के विषय को लेकर विशेष रूप से सच है।

साप्ताहिक रूप से मनाए जाने वाले दिन के बारे में बहुसंख्यकों की वंशागत राय है, और उन्हें किसी अन्य दृष्टिकोण को निष्पक्षता से देखना बहुत कठिन लगता है। उनमें से बहुत से लोग जानते हैं कि दस आज्ञाओं में से एक सप्ताह के सातवें दिन के पालन का आदेश देती है। वे यह भी जानते हैं कि सातवां दिन शनिवार है। फिर भी वे दृढ़ता से उस दिन से अलग दिन मनाने की परंपरा का पालन करते हैं जिसकी आज्ञा ईश्वर ने दी है। वे सप्ताह के पहले दिन रविवार को पूजा करते हैं, जिसके लिए कोई बाइबिल आदेश नहीं है।

वे ऐसा क्यों करते हैं? रविवार का पालन करने वालो ने उस समुदाय के धार्मिक बहुसंख्यकों की प्रथा को स्वीकार कर लिया है जहां उनका पालन-पोषण हुआ था; यह मानते हुए कि यह सही होना चाहिए क्योंकि बहुत से लोग ऐसा कर रहे हैं। क्या यह एक सुरक्षित धारणा है? क्या आमतौर पर धार्मिक मामलों में बहुमत सही रहा है?

बाइबल स्पष्ट रूप से इन प्रश्नों का उत्तर नकारात्मक में देती है। सूचना के हर उपलब्ध स्रोत से पता चलता है कि धार्मिक मामलों में,

कम से कम, बहुमत हमेशा गलत रहा है। यीशु ने स्वयं कहा, "जैसा नूह के दिनों में हुआ था, वैसा ही मनुष्य के पुत्र के दिनों में भी होगा" (लूका 17:26)। जलप्रलय से बचने के लिए केवल आठ लोग जहाज में गए। मसीह ने सिखाया कि दुनिया के अंत में केवल कुछ तुलनीय लोगों को बचाया जाएगा। उसने कहा, "सकेत फाटक से प्रवेश करो, क्योंकि चौड़ा है वह फाटक और सरल है वह मार्ग जो विनाश को पहुंचाता है; और बहुतेरे हैं जो उस से प्रवेश करते हैं। क्योंकि सकेत है वह फाटक और कठीन है वह मार्ग जो जीवन को पहुंचाता है, और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं" (मत्ती 7:13,14)।

यह बहुत सच है कि आज के अधिकांश मसीही, जिनमें कई प्रसिद्ध इंजीलवादी और धर्मशास्त्री शामिल हैं, सातवें दिन सब्त के बजाय सूर्य दिवस मना रहे हैं। अकेले इस तथ्य को किसी को प्रभावित नहीं करना चाहिए।

कुछ और जोड़े बिना अपने आप में, मसीह के वचनों के प्रकाश में, इस चेतावनी को ध्यान में लाना चाहिए। सत्य जनता के बीच कभी लोकप्रिय नहीं रहा। और जो वर्तमान में अधिक संख्या में हैं, जैसा कि पिछले सभी युगों में थे, वे वास्तव में सत्य की उतनी तलाश नहीं कर रहे हैं, जितना कि वे एक सहज, आसान, आरामदायक धर्म की तलाश में हैं जो उन्हें वैसे ही जीने की अनुमति देगा जैसा वे जीना चाहते हैं।

तो फिर, सब्त की सच्चाई की परख क्या होनी चाहिए? सिर्फ एक चीज, और सिर्फ एक चीज-परमेश्वर का वचन। दुर्भाग्य से, लाखों लोगों ने इस विषय पर स्वयं के लिए कभी भी बाइबल का अध्ययन नहीं किया है। मेरा प्रस्ताव है कि हम इस बहुसंख्यक समूह के रविवार

को रखने के अभ्यास का परीक्षण करें और पता करें कि क्या यह सही है। अगर यह बाइबिल है, तो हम सभी को इसे स्वीकार करना चाहिए और हर रविवार का ईमानदारी से पालन करना चाहिए। यदि पवित्रशास्त्र इसका समर्थन नहीं करता है, तो हमें वचन की खोज तब तक करनी चाहिए जब तक कि हमें वह दिन न मिल जाए जिसे हमारे द्वारा पालन किए जाने के लिए प्रभु ने समर्थित किया है। इस विषय तक पहुँचने का सबसे विश्वसनीय तरीका यह है कि सप्ताह के पहले दिन के बारे में बाइबल जो कुछ कहती है, उस पर पूरी तरह से एक नजर डालें। नए नियम में केवल आठ पाठ हैं जो रविवार को संदर्भित करते हैं, और इनपदों का ध्यानपूर्वक अध्ययन करके हम निश्चित हो सकते हैं कि विचार करने के लिए सभी सबूत हमारे सामने हैं। यदि सप्ताह के पहले दिन का पालन करने के लिए कोई बाइबिल अधिकार है, तो उसे इनमें से किसी एक पद में खोजना होगा।

क्या हम इस तरह के व्यापक अध्ययन के परिणामों का सामना करने के लिए तैयार हैं? यहीं पर हमारे पूर्वाग्रह की परीक्षा होगी! क्या इस उद्देश्यपूर्ण खोज से जो कुछ भी पता चलता है, क्या हम उसके लिए दूसरों की राय सुनने के लिए तैयार है।अपना दिमाग पूरी तरह खोल सकते हैं? ये पेचीदा सवाल नहीं हैं। व्यक्तिगत रूप से, मुझे परवाह नहीं है कि कौन सा दिन सब्त का दिन ज्ञात होता है। अगर बाइबल सिखाती है, तो मैं खुशी-खुशी सोमवार, गुरुवार, शुक्रवार या रविवार का पालन करूँगा। बहुत पहले, मैंने एक मसीही होने और परमेश्वर के वचन का पालन करने का फैसला किया, चाहे वह मेरी भावनाओं की परवाह किए बिना कहीं भी ले जाए। इससे मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता कि मैं किस दिन पवित्र रहता हूँ, जब तक कि यह

बाइबल में आज्ञा है! मुझे आशा है कि आप उसी तरह महसूस करेंगे जब हम नए नियम में हर एक संदर्भ की परीक्षा शुरू करते हैं जो सप्ताह के पहले दिन का उल्लेख करता है।

अध्याय तीनः
रविवार को पुनरुत्थान

आइए पहले सुसमाचार के साथ आरंभ करें। मत्ती लिखता है, "सब्त के दिन के बाद में सप्ताह के पहले दिन पौ फटते ही मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कब्र को देखने आई" (मत्ती 28:1)। यहाँ हमारे पास कुछ बहुत ही दिलचस्प सबूत हैं कि सब्त संभवतः सप्ताह का पहला दिन नहीं हो सकता है। इस अभिलेख के अनुसार, जब पहला दिन शुरू हो रहा था, तब सब्त समाप्त हो रहा था। वे लगातार दो दिन हैं। पवित्रशास्त्र के आधार पर कोई भी सच्चाई से रविवार को सब्त नहीं कह सकता। यह भ्रमित करने वाला और गैर-बाइबिलीय दोनों होगा। मत्ती की गवाही का सार यह है कि स्त्रियाँ सब्त के अगले दिन भोर में आईं और उन्होंने पाया कि यीशु पहले ही जी उठा था। यह पूरी तरह से अगले सुसमाचार के साथ मेल खाता है, जो कुछ और विवरण जोड़ता है। ध्यान दें कि मरकुस भोर की तुलना "सूर्य के उदय" से करता है। उसने लिखा, "जब सब्त का दिन बीत गया, तब मरियम मगदलीनी, और याकूब की माता मरियम और सलोमी ने सुगन्धित वस्तुएं मोल लीं, कि आकर उस पर मलें। और सप्ताह के

पहले दिन बड़ी भोर, जब सूरज निकला ही था, वे कब्र पर आईं। और आपस में कहती थीं, कि हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?" (मरकुस 16:1-3)।

ये समानांतर सुसमाचार वृत्तांत एक आम गलतफहमी को दूर करते हैं जो मत्ती के शब्दों "सप्ताह के पहले दिन की भोर होते ही" के अर्थ के बारे में उत्पन्न हुई है। कुछ लोगों ने इसकी व्याख्या शनिवार की शाम को सूर्यास्त से ठीक पहले की है। चूँकि इब्रानी अनुमान सब्त के अंत को सूर्यास्त के समय ठहराता है, वे मानते हैं कि स्त्रियाँ पहले दिन सूर्यास्त होने से ठीक पहले आईं।

यहां हम अवतरण के साथ अवतरण की तुलना करने के महत्व को देखते हैं। मरकुस के शब्दों से यह धारणा असंभव हो जाती है कि शनिवार की रात स्त्रियों ने आकर कब्र को खाली पाया। वह उन्हीं स्त्रियों को सूचीबद्ध करता है जो रविवार की सुबह सूर्योदय के समय आती हैं, लेकिन वे सवाल पूछ रही थीं, "हमारे लिये कब्र के द्वार पर से पत्थर कौन लुढ़काएगा?" जाहिर है, अगर वे एक रात पहले वहां होतीं और एक खाली कब्र पातीं, तो उन्हें पता होता कि पत्थर पहले ही दरवाजे से हटा दिया गया था। इस प्रकार, हम स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं किमत्ती की "भोर" रविवार की सुबह सूर्योदय के समय सुबह की यात्रा का उल्लेख कर रहा है।

नए नियम के पहले दिन का तीसरा संदर्भ मरकुस 16:9 में एक साधारण वर्णनात्मक कथन है, "सप्ताह के पहले दिन भोर होते ही वह जी उठ कर सबसे पहले मरियम मगदलीनी को, जिस में से उस ने सात दुष्टात्माएं निकाली थीं, दिखाई दिया।" यहाँ छोटी-सी टिप्पणी की ही आवश्यकता है, क्योंकि यह पद रविवार की सुबह भोर होते ही

पुनरुत्थान की वही कहानी दोहरा रहा है। ध्यान देने वाली महत्वपूर्ण बात यह है कि इनमें से किसी भी पद में सप्ताह के पहले दिन के पवित्र होने के बारे में कुछ नहीं कहा गया है। पुनरुत्थान के सम्मान में किसी के द्वारा इस दिन को मनाने की कोई सूचना नहीं है।

अध्याय चारः
सच्चे सब्त का पता लगाना

पुनरुत्थान की घटनाओं के सबसे पूर्ण चित्रण में से एक लूका के सुसमाचार में पाया जाता है, और यहाँ हम सप्ताह के पहले दिन के चौथे संदर्भ को पढ़ते हैं। "उस ने पिलातुस के पास जाकर यीशु की लोथ मांग ली। और उसे उतारकर चादर में लपेटा, और एक कब्र में रखा, जो चट्टान में खोदी हुई थी और उस में कोई कभी न रखा गया था। वह तैयारी का दिन था, और सब्त का दिन आरम्भ होने पर था" (लूका 23:52–54)।

आगे पढ़ने से पहले, आइए हम इस सूली पर चढ़ाये जाने के दिन के प्रेरित विवरण की सावधानीपूर्वक जाँच करें। अधिकांश मसीही बहुसंख्यक इस बात से सहमत हैं कि ये घटनाएँ उस दिन हुई थीं जिसे हम अब गुड फ्राइडे कहते हैं। यहाँ इसे "तैयारी" का दिन कहा जाता है, क्योंकि यह निकट आने वाले सब्त के लिए विशेष प्रबंध करने का समय था। वास्तव में, पाठ बहुत ही सरलता से कहता है "सब्त का दिन आरम्भ होने पर था।" इसका मतलब है कि यह आगे आ रहा था।

उस दिन और क्या हुआ जब यीशु की मृत्यु हुई? “और उन स्त्रियों ने जो उसके साथ गलील से आईं थीं, पीछे पीछे जाकर उस कब्र को देखा, और यह भी कि उस की लोथ किस रीति से रखी गई है। और लौटकर सुगन्धित वस्तुएं और इत्र तैयार कियाः और सब्त के दिन तो उन्होंने आज्ञा के अनुसार विश्राम किया” (पद 55,56)

उस घातक शुक्रवार के शेष दिन के दौरान, समर्पित महिलाओं ने अभिषेक सामग्री खरीदी और कब्र पर अपनी रविवार की सुबह की यात्रा के लिए और तैयारी की। फिर, जब सूर्यास्त के समय सब्त का दिन शुरू हुआ, तो उन्होंने “आज्ञा के अनुसार सब्त के दिन विश्राम किया।” यह उस पवित्र दिन को दस आज्ञाओं के विशिष्ट साप्ताहिक सब्त के रूप में अभिनिर्धारित करता है, न कि फसह या किसी अन्य पर्व सब्त के रूप में जो सप्ताह के किसी भी दिन पड़ सकता था।

अगला पद बताता है कि सब्त के बाद के दिन स्त्रियों ने क्या किया। “परन्तु सप्ताह के पहले दिन बड़े भोर को वे उन सुगन्धित वस्तुओं को जो उन्होंने तैयार की थीं, ले कर कब्र पर आईं। और उन्होंने पत्थर को कब्र पर से लुढ़का हुआ पाया” (लूका 24:1,2)। सबसे पहले, हम देखते हैं कि पुनरुत्थान के दिन स्त्रियाँ अपना नियमित श्रम करने के लिए आई थीं। आधुनिक कलीसियाएं सप्ताह के उस विशेष दिन को ईस्टर रविवार के रूप में संदर्भित करता है।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि यीशु को उस सुबह के अंधेरे घंटों के दौरान किसी समय उठाया गया था। किसी भी सुसमाचार पाठ में हमारे पास इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि महिलाओं या किसी और ने जिस दिन पुनरुत्थान हुआ था उस दिन के साथ पवित्रता को संलग्न किया हो।

उस घटनापूर्ण सप्ताहांत के बारे में लूका का वृत्तांत किसी भी प्रश्न से परे साबित करता है कि सच्चा सातवाँ दिन सब्त अभी भी ठीक-ठीक पाया जा सकता है। वह लगातार तीन दिनों में घटनाओं के क्रम का वर्णन करता है-शुक्रवार, शनिवार और रविवार। तैयारी के दिन यीशु की मृत्यु हो गई, और सब्त का दिन निकट था। मसीही अब इसे गुड फ्राइडे के रूप में संदर्भित करते हैं। अगले दिन "आज्ञा के अनुसार" सब्त था। चूंकि आज्ञा स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट करती है कि "सातवां दिन प्रभु का विश्रामदिन है," इसलिए सब्त शनिवार को होना था।

यह ध्यान रखना बहुत दिलचस्प है कि यीशु ने छुटकारे के अपने कार्य से सब्त के दिन कब्र में विश्राम किया था, ठीक वैसे ही जैसे उसने सब्त के दिन अपने सृजन के कार्य से विश्राम किया था।

सब्त के अगले दिन, यीशु जी उठा। आज इसे ईस्टर संडे कहा जाता है, लेकिन बाइबल इसे "सप्ताह का पहला दिन" बताती है। इन निर्विवाद, ऐतिहासिक तथ्यों के आलोक में, जिन्हें संपूर्ण ईसाई धर्म मानते हैं, कोई भी सच्चे सब्त की अज्ञानता की दलील नहीं दे सकता है। यह गुड फ्राइडे और ईस्टर संडे के बीच का दिन है। लूका का अभिलेख उन तीन दिनों का इतना सटीक कालानुक्रमिक विवरण है कि सबसे सरल और अशिक्षित भी हमारे आधुनिक कैलेंडर पर बाइबिल के सातवें दिन का पता लगा सकते हैं।

अब हम रविवार से संबंधित पांचवें नए नियम के कथन की जांच करने के लिए तैयार हैं। "सप्ताह के पहले दिन मरियम मगदलीनी भोर को अंधेरा रहते ही कब्र पर आई, और पत्थर को कब्र से हटा हुआ देखा" (यूहन्ना 20:1)। यूहन्ना द्वारा दिए गए पुनरुत्थान के विवरण

में बहुत कम नई जानकारी है। अन्य सभी लेखकों की तरह वह इस बात का कोई संकेत नहीं देता है कि सप्ताह के पहले दिन को कभी भी पवित्र माना जाता था या किसी के द्वारा पवित्र रखा जाता था। अब तक, सभी सुसमाचार कहानियों में महत्वपूर्ण सामान्य सूत्र ऐसे साक्ष्यों का पूर्ण अभाव रहा है।

अध्याय पांचः
यहूदियों के डर से

यूहन्ना ने उसी अध्याय में फिर से "पहले दिन" का उल्लेख किया है, और रविवार आराधना,के संदर्भ के रूप में इसकी अक्सर गलत व्याख्या की गई है। "उसी दिन जो सप्ताह का पहला दिन था, सन्ध्या के समय जब वहां के द्वार जहां चेले थे, यहूदियों के डर के मारे बन्द थे, तब यीशु आया और बीच में खड़ा होकर उन से कहा, तुम्हें शान्ति मिले" (यूहन्ना 20:19)। हालाँकि बंद दरवाजों के पीछे यह सभा पुनरुत्थान के दिन ही हुई थी, क्या यह उस घटना का विशेष स्मरणोत्सव था? परिस्थितियाँ ऐसा होना असंभव बना देती हैं। पाठ स्पष्ट रूप से कहता है कि वे "यहूदियों के डर से" वहाँ एकत्र हुए थे। भयभीत शिष्यों ने पहले ही जान लिया था कि कब्र खाली थी, और उन्हें उम्मीद थी कि जल्द ही यीशु के शरीर को चुराने का आरोप लगाया जाएगा। वे सुरक्षा और आश्वासन के लिए बंद कमरे में एक साथ छिप गए।

सच तो यह है कि उन्हें विश्वास नहीं था कि मसीह मरे हुओं में से जी उठा था। मरकुस के वृत्तांत से पता चलता है कि उन्होंने मरियम और अन्य शिष्यों की गवाही को पूरी तरह से खारिज कर दिया, जो पुनर्जीवित प्रभु को वास्तव में देखने की खबर लाए थे।। "उस ने जाकर उसके साथियों को जो शोक में डूबे हुए थे और रो रहे थे, समाचार दिया। और उन्होंने यह सुनकर की वह जीवित है, और उस ने उसे देखा है, प्रतीति न की। इस के बाद वह दूसरे रूप में उन में से दो को जब वे गांव की ओर जा रहे थे, दिखाई दिया। उन्होंने भी जाकर औरों को समाचार दिया, परन्तु उन्होंने उन की भी प्रतीति न की। पीछे वह उन ग्यारहों को भी, जब वे भोजन करने बैठे थे दिखाई दिया, और उन के अविश्वास और मन की कठोरता पर उलाहना दिया, क्योंकि जिन्होंने उसके जी उठने के बाद उसे देखा था, इन्होंने उन की प्रतीति न की थी" (मरकुस 16:10-14)।

इन शब्दों के आधार पर, हमें बंद कमरे में हुई रविवार दोपहर की संकोचशील सभा को नजरअंदाज कर देना चाहिए। यह पुनरुत्थान पर असंयमित आनंद का अवसर नहीं था, जैसा कि कुछ लोगों ने चित्रित किया है। वास्तव में, चेलों की ओर से भी कोई मान्यता नहीं थी कि कोई चमत्कार हुआ है। वे भयभीत, उदास और अविश्वासी थे। जब यीशु उन्हें दिखाई दिया तो उसने उनके विश्वास की कमी के कारण, और क्योंकि उन्होंने अपने ही साथियों की गवाही को अस्वीकार कर दिया था, कड़ी फटकार के शब्द बोले। पुनरुत्थान के सम्मान में इसे एक सुखद स्मारक उपासना बनाना कितना भ्रामक है!

अब तक, हमने रविवार के पालन का एक भी उदाहरण पाए बिना नए नियम के आठ संदर्भों में से छह का सावधानीपूर्वक अध्ययन

किया है। वास्तव में, उनमें से प्रत्येक आराधना, प्रार्थना, विश्राम, या पुनरुत्थान के सम्मान के लिए सप्ताह के पहले दिन की किसी भी मान्यता की एक सुसंगत, पूर्ण अज्ञानता को प्रकट करता है। घटनाओं के घटित होने के कई वर्षों बाद सुसमाचार लिखे गए थे, जिससे पवित्र आत्मा को लेखकों को पूर्ण तथ्यों के साथ प्रेरित करने के कई अवसर मिले। यीशु ने अपने शिष्यों से कहा कि उस आत्मा का कार्य "तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा" था (यूहन्ना 16:13)। यदि पहले दिन का पालन सत्य का कोई भाग होता, तो पवित्र आत्मा को इसे मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना पर प्रकट करने के लिए दिव्य रूप से बाध्य किया गया होता। हमारे परमेश्वर ने ऐसा कहा।

अब हम शेष दो संदर्भों पर विचार करना शुरु करते हैं। अगर हमें इन अवतरण में कोई सबूत नहीं मिलता है, तो हमें खोज को छोड़ना होगा, क्योंकि और कहीं देखने को नहीं है। पौलुस और लूका अंतिम गवाह हैं जो सप्ताह के पहले दिन का उल्लेख करते हैं, और जो कुछ उन्होंने कहा उसमें उन दोनों को अत्यंत अनुचित ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

अध्याय छहः
कुरिन्थुस में कोई रविवार-पालन नहीं

1 कुरिन्थियों 16:1, 2 में, पौलुस ने लिखाः अब उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, जैसी आज्ञा मैं ने गलातिया की कलीसियाओं को दी, वैसा ही तुम भी

करो। सप्ताह के पहला दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे, कि मेरे आने पर ... जिन्हें तुम चाहोगे उन्हें मैं चिट्ठियां देकर भेज दूंगा, कि तुम्हारा दान यरूशलेम पहुंचा दें।"

कृपया ध्यान से देखें कि प्रेरित ने क्या कहा, और क्या नहीं कहा। कई लोगों ने मान लिया है कि एक धार्मिक सभा हुई और एक चन्दे की थैली घुमाई गई। यह वह मामला नहीं है। पौलुस एशिया माइनर की कलीसियाओं के लिए विशेष निवेदन लिख रहा था, क्योंकि यरूशलेम में बहुत से मसीही भोजन और दैनिक आवश्यकताओं की कमी के कारण बहुत कष्ट झेल रहे थे। पौलुस ने कुरिन्थस की कलीसिया से भोजन, वस्त्र आदि इकट्ठा करने और उसे घर पर तब तक रखने के लिए कहा जब तक कि वह उसे यरूशलेम ले जाने के लिए आदमियों को न भेज सके। मूल यूनानी भाषा में "रख छोड़ा" वाक्यांश घर पर अलग रखने का स्पष्ट अर्थ देता है। रविवार के अधिवक्ता भी इससे सहमत हैं।

सप्ताह के पहले दिन कोई आराधना नहीं होती थी। उस दिन इकट्ठा करना और भंडारण होता था। पौलुस ने यह सुझाव क्यों दिया कि यह कार्य रविवार को किया जाना चाहिए, और इसे करने में क्या शामिल था?

सबसे पहले, पत्र को सब्त के दिन कलीसिया के साथ साझा किया जाता होगा जब वे सभी आराधना के लिए एकत्रित होते थे। काम करने का पहला अवसर अगले दिन होगा-सप्ताह के पहले दिन। ध्यान रखें कि यरूशलेम में स्पष्ट रूप से भोजन की कमी थी, और इसकी आवश्यकता मुख्य रूप से पैसे की नहीं थी। मध्य पूर्व के क्षेत्रों

में अकाल की ऐसी स्थिति असामान्य नहीं थी, जैसा कि लूका हमें प्रेरितों के काम 11:28-30 में याद दिलाता है।

रोम की कलीसिया पीड़ित मसीहियों की विशेष जरूरतों के बारे में एक सुराग देती है। "परन्तु अभी तो पवित्र लोगों की सेवा करने के लिये यरूशलेम को जाता हूं। क्योंकि मकिदुनिया और अखया के लोगों को यह और अच्छा लगा, कि यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिये कुछ चन्दा करें। अच्छा तो लगा, परन्तु वे उन के कर्जदार भी हैं, क्योंकि यदि अन्यजाति उन की आत्मिक बातों में भागी हुए, तो उन्हें भी उचित है, कि शारीरिक बातों में उन की सेवा करें। इसलिए मैं यह काम पूरा करके और उन को यह चन्दा (फल) सौंप कर तुम्हारे पास होता हुआ स्पेन को जाऊंगा" (रोमियों 15:25-28)

यहाँ प्रेरित अपनी वाक्पटु याचिका में एक कोमल स्थान को छूता है। रोमन मसीहियों (गैर यहूदियों) पर यरुशलेम में मातृ कलीसिया के प्रति कृतज्ञता का एक बड़ा कर्ज था, जिसने उन्हें उपदेश देने के लिए शिक्षकों को भेजा था। पौलुस उनसे आग्रह करता है कि यदि वे उन की आध्यात्मिक सच्चाइयों अर्थात आत्मिक बातों में भागी हुए, तो उन्हें भी उचित है, कि आभार व्यक्त करने के लिए वे भौतिक बातों में उन की सेवा करें। पौलुस के मन में किस प्रकार के उपहार थे? यह बहुत दिलचस्प है कि वह इसे इस तरह वर्णित करता है "सुरक्षा के साथ उनके हाथों में यह चन्दा (फल) सौंप कर"। यहाँ इस्तेमाल किया गया यूनानी शब्द "कार पोस" है, जो कि शाब्दिक फल के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला सार्वभौमिक शब्द है। इसका अर्थ "किसी के परिश्रम का फल" भी हो सकता है।

यह कुरिन्थ के मसीहियों को सप्ताह के पहले दिन अपना काम करने के लिए पौलुस की सलाह पर प्रकाश डालता है, “ताकि मेरे आने पर कोई सभा न हो।” सब्त के दिन बगीचे और खेत से उपज इकट्ठा करने और जमा करने जैसा काम निश्चित रूप से उचित नहीं होगा। इन पदों में, रविवार को एक बार फिर से सांसारिक गतिविधियों के लिए एक दिन के रूप में पहचाना जाता है और धार्मिक पालन का कोई संकेत नहीं देता है।

अध्याय सातः
पौलुस का सबसे लंबा उपदेश

यह हमें अंतिम संदर्भ में लाता है जो रविवार की पवित्रता के लिए कोई सहायता प्रदान कर सकता है। लूका के आरम्भिक कलीसिया के इतिहास में, वह प्रभावशाली विदाई सभा का वर्णन करता है, जो पौलुस ने त्रोआस के विश्वासियों के साथ की थी। जो लोग परमेश्वर की आज्ञाओं की अवज्ञा को उचित ठहराने के लिए किसी भी छोटे बहाने को पकड़ लेते हैं, उन्होंने प्रेरितों के काम की पुस्तक में इस विवरण को गंभीर रूप से विकृत कर दिया है। क्योंकि नए नियम में सप्ताह के पहले दिन होने वाली धार्मिक सभा का यह एकमात्र रिकॉर्ड है, इसलिए हमें विशेष सावधानी और रुचि के साथ इसकी जाँच करनी चाहिए।

पूरे प्रसंग से पता चलता है कि यह एक रात की मुलाकात थी। “और हम अखमीरी रोटी के दिनों के बाद फिलिप्पी से जहाज पर

चढ़कर पांच दिन में त्रोआस में उन के पास पहुंचे, और सात दिन तक वहीं रहे। सप्ताह के पहले दिन जब हम रोटी तोड़ने के लिये इकट्ठे हुए, तो पौलुस ने जो दूसरे दिन चले जाने पर था, उन से बातें की, और आधी रात तक बातें करता रहा। जिस अटारी पर हम इकट्ठे थे, उस में बहुत दीपक जल रहे थे। और यूतुखुस नाम का एक जवान खिड़की पर बैठा हुआ गहरी नींद से झुक रहा था, ... तो वह नींद के झोंके में तीसरी अटारी पर से गिर पड़ा, और मरा हुआ उठाया गया। परन्तु पौलुस उतरकर उस से लिपट गया, और गले लगाकर कहा; घबराओ नहीं; क्योंकि उसका प्राण उसी में है। और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उन से बातें करता रहा, कि पौ फट गई; फिर वह चला गया। और वे उस लड़के को जीवित ले आए, और बहुत शान्ति पाई। हम पहला से जहाज पर चढ़कर अस्सुस को इस विचार से आगे गए, कि वहां से हम पौलुस को चढ़ा लें क्योंकि उस ने यह इसलिये ठहराया था, कि आप ही पैदल जाने वाला था” (प्रेरितों के काम 20:6-13)।

त्रोआस में पूरी रात हुई इस सभा के बारे में कुछ बहुत ही असामान्य बातें हैं। सबसे पहले, यह वक्ता और मंडली के लिए भी एक गंभीर, मार्मिक अवसर होना चाहिए था। पद 25 में पौलुस ने घोषणा की, “और अब देखो, मैं जानता हूं, कि तुम सब जिनमें मैं परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता फिरा, मेरा मुंह फिर न देखोगे।”

जाहिर सी बात है कि यह विदाई सभा सप्ताह के पहले दिन के अंधेरे हिस्से में हुई थी। कमरे में रोशनी थी, और पौलुस ने आधी रात तक प्रचार किया। समय की गणना के यहूदी तरीके को समझना महत्वपूर्ण है। बुतपरस्त रोमन पद्धति के अनुसार मध्यरात्रि से मध्यरात्रि

तक दिनों की गणना नहीं की जाती थी। बाइबल में दिन की शुरुआत शाम से होती है।

उत्पत्ति सप्ताह के सभी दिनों का इसी तरह वर्णन करती है– "तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन हो गया" आदि। दूसरे शब्दों में, शाम हमेशा दिन में सबसे पहले आती है।

यह बताता है कि सब्त का वर्णन इन शब्दों में क्यों किया गया है "वह दिन तुम्हारे लिये परमविश्राम का हो, उस में तुम अपने अपने जीव को दुःख देना; और उस महीने के नवें दिन की सांझ से ले कर दूसरी सांझ तक अपना विश्रामदिन माना करना" (लैव्यव्यवस्था 23:32)। लेकिन बाइबल के अनुसार शाम कब शुरू होती है?

"सन्ध्या के समय जब सूर्य डूब गया तो लोग सब बीमारों को और उन्हें जिन में दुष्टात्माएं थीं उसके पास लाए" (मरकुस 1:32)। चूँकि फरीसी सिखाते थे कि सब्त के दिन चंगा करना गलत है, इसलिए लोगों ने अपने बीमारों को यीशु के पास लाने से पहले सब्त खत्म होने तक इंतजार किया। इसलिए, वे उन्हें "सन्ध्या के समय जब सूर्य डूब गया" लेकर आए।मूसा ने लिखा, "सूरज डूबने पर संध्याकाल को, फसह का पशुबलि करना" (व्यवस्थाविवरण 16:6)।

नहेम्याह में, हमें सब्त की शुरुआत का एक और विवरण दिया गया है। "अतः जब विश्रामवार के पहले दिन को यरूशलेम के फाटकों के आस-पास अन्धेरा होने लगा, तब मैं ने आज्ञा दी, कि उनके पल्ले बन्द किए जाएं, और यह भी आज्ञा दी, कि वे विश्रामवार के पूरे होने तक खोले न जाएं। तब मैं ने अपने कितने सेवकों को फाटकों का अधिकारी ठहरा दिया, कि विश्रामवार को कोई बोझ भीतर आने न

पाए।” (नहेम्याह 13:19)। यह सब्त के पहले क्षणों को सूर्यास्त के समय रखता है, जब अंधेरा होने लगता है।

अब हम त्रोआस में पौलुस की पहले दिन की सभा में इस ठोस बाइबल सिद्धांत को लागू करने के लिए तैयार हैं। रात की सेटिंग के लिए यह आवश्यक होगा कि इसे शनिवार की रात को आयोजित किया जाए। सब्त सूर्यास्त के समय समाप्त हुआ, और सप्ताह का पहला दिन शुरू हुआ। पौलुस, जो पूरे सात दिन रहा था ताकि वह सब्त के दिन लोगों के साथ रह सके, ने शनिवार की रात को जहाज के साथ नहीं जाने का फैसला किया। इसके बजाय, उसने पूरी रात विश्वासियों के साथ संगति की और फिर रविवार की सुबह प्रायद्वीप में बीस मील पैदल चलकर अस्सुस में नाव में शामिल हो गया।

संयोग से, लूका सहित पौलुस के मिशनरी साथियों ने, जिन्होंने सावधानीपूर्वक निर्धारित यात्रा के मुख्य अंशों का वर्णन किया, इस नाव को चलाया। यह बहुत महत्वपूर्ण है कि शनिवार की रात को सब्त खत्म होने तक वे समुद्र में नहीं गए। रविवार की सुबह थलसन्धि में पौलुस की बीस मील की पैदल यात्रा उतनी ही अनुचित होती जितना कि एक पवित्र दिन पर पतवार और पालों पर मेहनत करना अनुचित होता। परमेश्वर के पवित्र सब्त के दिन न तो पौलुस और न ही उसके साथी यात्री उन सांसारिक गतिविधियों में शामिल हुए।

अध्याय आठः
यूतुखुस अटारी पर से क्यों गिर पड़ा

द न्यू इंग्लिश बाइबल वास्तव में कहती है कि सभा शनिवार की रात को आयोजित की गई थी। कहानी का मुख्य केंद्र बिंदु यूतुखुस को खिड़की से बाहर गिरने के बाद मृतकों में से जीवित करने पर है। निडर पौलुस, सब्त के दिन और शनिवार की रात पूरी रात सेवकाई करने के बाद, रविवार की सुबह बीस मील चलकर अस्सो में अपने साथियों के साथ होने गया। सब्त खत्म होने के बाद, शनिवार की रात प्रायद्वीप के चारों ओर जलयात्रा के दौरान, वे जहाज पर थे। अगले दिन पौलुस द्वारा इतनी लंबी पैदल यात्रा किसी भी प्रकार के पवित्र दिन पर बहुत अनुचित होती।

कुछ लोगों ने रोटी तोड़ने की तुलना पवित्र भोज विधि से की है, लेकिन इस तरह के दृष्टिकोण का समर्थन पवित्र शास्त्र से नहीं किया जा सकता है। लूका हमें आश्वासन देता है कि वे आरंभिक मसीही प्रतिदिन रोटी तोड़ते थे। “और वे प्रति दिन एक मन होकर मन्दिर में इकट्ठे होते थे, और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मन की सीधाई से भोजन किया करते थे” (प्रेरितों के काम 2:46)।

बाइबल इस विवाद की पुष्टि नहीं कर सकती है कि पौलुस ने ऊपरी कक्ष में विश्वासियों के साथ प्रभु भोज मनाया। शब्दों से यह संकेत मिलता है कि यह एक आम भोजन था जिसे उन्होंने एक साथ साझा किया था। “और ऊपर जाकर रोटी तोड़ी और खाकर इतनी देर तक उन से बातें करता रहा, कि पौ फट गई; फिर वह चला गया” (प्रेरितों के काम 20:11)। यहाँ हम पाते हैं कि खाने का संबंध रोटी

तोड़ने से था। यह संभावना नहीं है कि भोज भोजन को इस तरह से संदर्भित किया जाएगा।

लेकिन भले ही उस विदाई सभा में मसीह की पीड़ा और मृत्यु का उत्सव शामिल था, यह रविवार के पालन को कोई श्रेय नहीं देगा। हमने प्रेरितों के काम 2 से देखा है कि प्रतिदिन रोटी तोड़ी जाती थी, और कहीं भी प्रभु भोज का किसी विशेष दिन से संबंध नहीं है। यह निश्चित रूप से सभी के लिए स्पष्ट है कि त्रोआस सभा नियमित साप्ताहिक उपासना नहीं थी। उस रात के पूरे सत्र का महत्व युवक यूतुखुस के चमत्कारी पुनरुत्थान में प्रकट होता है, और इस तथ्य में कि पॉल उन्हें अपनी मृत्यु से पहले फिर कभी नहीं देख पाएगा। विशेष समय सीमा-शनिवार की पूरी रात-का कोई आध्यात्मिक महत्व नहीं है। लूका, अतिसतर्क इतिहासकार, पौलुस के मैराथन (बहुत लम्बे) धर्मोपदेश के किसी भी अवयव को लिपिबद्ध नहीं करता है, हालांकि वह ईमानदारी से पुनर्जीवित युवाओं के चमत्कार का दस्तावेजीकरण करता है। जाहिर है, लूका यूतुखुस के अटारी की खिड़की से बाहर गिरने के तरीके को प्रमाणित करने की कोशिश कर रहा है, न कि उस दिन को जिस दिन यह हुआ था।

अब हमने नए नियम में पाए गए सप्ताह के पहले दिन के आठ संदर्भों में से प्रत्येक की गहन अवलोकन पूरा कर लिया है।उनमें से किसी ने भी इस बात का जरा सा भी प्रमाण नहीं दिया कि रविवार को कभी परमेश्वर द्वारा पवित्र ठहराया गया था या मनुष्य द्वारा मनाया गया था। ईश्वर की महान अचूक परीक्षा पुस्तक से पता चला है कि बहुसंख्यक सत्य के बजाय परंपरा का पालन कर रहे हैं। लाखों लोग

एक निरर्थक मूर्तिपूजक प्रतीक का अंधा पालन करने के लिए बहकावे में आ गये हैं।

मुझे एक रूसी सम्राट की कहानी याद आ रही है जो एक सुबह अपने विशाल महल के मैदान के सीमा क्षेत्र में टहल रहा था। वहाँ उसने एक सैनिक को कंधे पर बंदूक लिए हुए आंगन की दीवार के एक सुनसान कोने के पास आगे-पीछे कदमताल करते देखा। उसने सिपाही से पूछा, जो जाहिर तौर पर संतरी की ड्यूटी पर था, कि वह किसकी रखवाली कर रहा था। उस व्यक्ति ने उत्तर दिया कि वह केवल आदेशों का पालन कर रहा है और यह नहीं जानता कि उसे उस विशेष स्थान पर क्यों नियुक्त किया गया है। सम्राट ने गार्ड के कैप्टन से पूछा कि सिपाही क्या कर रहा है, लेकिन उसे भी कुछ पता नहीं था। महल की सुरक्षा के प्रभारी जनरल से सलाह ली गई, लेकिन वह नियत कार्य का कोई कारण नहीं बता सके। अंत में, राजा ने धूल भरे सैन्य रिकॉर्ड की खोज का आदेश दिया, और रहस्य सामने आया। बरसों पहले, रानी माँ ने आंगन के उस कोने में गुलाब की कुछ झाड़ियाँ लगाई थीं, और कोमल पौधों को कुचले जाने से बचाने के लिए एक सैनिक भेजा गया था। बाद में, कोई आदेश रद्द करना भूल गया था, और संतरी की दैनिक क्रिया वर्षों से जारी रही थी-खाली गुलाब के एक भूखंड की रखवाली करते हुए बंदूकधारी सैनिक।

आज लाखों ईमानदार मसीही हैं जो रविवार की पवित्रता की रक्षा के लिए निष्ठापूर्वक प्रयास कर रहे हैं। उन्हें इस बात का एहसास नहीं है कि वास्तव में रखवाली करने के लिए कुछ भी नहीं है। सप्ताह का पहला दिन उतना ही पवित्र होता है, जितना कि गुलाबों का

सुनसान आंगन। यीशु ने कहा, “हर वह पौधा जो मेरे स्वर्गीय पिता ने नहीं लगाया, जड़ से उखाड़ा जाएगा” (मत्ती 15:13)।

अध्याय नौः
वह दिन जिसका उन्होंने पालन किया

अब जबकि किसी छोटे अनुकूल सबूत के पाए बिना, हमने रविवार का पालन करने के लिए सभी संभव स्रोतों को समाप्त कर दिया है, आइए हम उस प्रारंभिक कलीसिया के प्रेरित इतिहास की ओर मुड़ें। यदि उन्होंने सप्ताह के पहले दिन का पालन नहीं किया, तो उन्होंने कौन से दिन का पालन किया? प्रेरितों के काम की पुस्तक सातवें दिन सब्त के पालन का एक सुसंगत पैटर्न स्थापित करती है। एक अवसर पर, पौलुस को अन्यजातियों द्वारा सब्त के दिन उनके लिए एक विशेष सेवा आयोजित करने के लिए निवेदन किया गया था। एक अवसर पर, अन्यजातियों ने पौलुस से सब्त के दिन उनके लिए एक विशेष सेवा आयोजित करने का अनुरोध किया। “और जब यहूदी आराधनालय से निकल गए, अन्यजातियों ने बिनती की कि अगले सब्त के दिन ये बातें उन्हें फिर सुनाई जाएं। … अगले सब्त के दिन नगर के प्रायः सब लोग परमेश्वर का वचन सुनने को इकट्ठे हो गए” (प्रेरितों के काम 13:42,44)।

इन सक्रिय पदों में कुछ बहुत ही दिलचस्प बिंदु हैं जो पौलुस और उसके साथी मसीहियों के सब्त के अभ्यासों को मान्य करते हैं।

आराधनालय में प्रचार करने के बाद, जहाँ अन्यजातियों को प्रवेश करने की अनुमति नहीं थी, पौलुस को अन्यजातियों ने घेर लिया और बिनती की कि “अगले सब्त के दिन” परमेश्वर का वचन सुनाया जाए। बहुतों ने आरोप लगाया है कि सब्त के दिन पौलुस केवल आराधनालयों में प्रचार करता था क्योंकि उसके पास प्रभावित करने के लिए यहूदियों की एक तैयार भीड़ थी। यह एक झूठा दावा है। इस उदाहरण में, पौलुस ने अगले सब्त के दिन अन्यजातियों में सेवकाई करने के लिए एक समय नियुक्त किया, और पद 43 के अनुसार, उस दिन उसे सुनने वालों में से बहुत से लोग विश्वास के लिए “नवदीक्षित” (यहूदी मत में आए हुए भक्त) थे। इसका मतलब है कि वे मसीही धर्म में परिवर्तित हो गए थे, और पौलुस और बरनबास ने “उन्हें समझाया, कि वे परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहें।”

यह कितना दिलचस्प है कि उनकी सब्त की आराधना को परमेश्वर के अनुग्रह में बने रहने के संदर्भ में कहा गया है! सब्त के आधुनिक आलोचक सब्त का पालन करने वालों को विधिवादी के रूप में वर्गीकरण करने का प्रयास करते हैं जो सुसमाचार के अनुग्रह से अपरिचित हैं।

बाइबल के लेखक, जो लगातार आज्ञाकारिता को विश्वास के द्वारा सच्चे उद्धार के साथ जोड़ते हैं, ऐसे नहीं हैं। प्रेरितों के काम 16:13 में हमारे पास सकारात्मक प्रमाण है कि पौलुस ने सब्त का तब भी पालन किया जब कोई आराधनालय नहीं था और कोई यहूदी नहीं था। वह यूनान में सेवकाई कर रहा था, जहाँ केवल कुछ छिट पुट यहूदी थे और कोई आराधनालय नहीं था। उसने सब्त के दिन क्या किया? “सब्त के दिन हम नगर के फाटक के बाहर नदी के किनारे यह

समझकर गए, कि वहां प्रार्थना करने का स्थान होगा; और बैठकर उन स्त्रियों से जो इकट्ठी हुई थीं, बातें करने लगे"।

यहां तक कि आराधनालय में भाग लेने के लिए, प्रेरित ने एक ऐसी जगह की तलाश की जहां आराधना की जाती थी-नदी के किनारे प्रार्थना की जगह-और वहां जाने वालों को प्रचार किया। निश्चित रूप से, कोई भी सब्त के प्रति पौलुस की गहरी प्रतिबद्धता को समझने में असफल नहीं हो सकता है जब हम इस असामान्य बाहरी मिशन में उसका अनुसरण करते हैं। मान लीजिए कि यह मकिदुनिया का अनुभव सब्त के बजाय सप्ताह के पहले दिन हुआ था। निस्संदेह, इसे रविवार की आराधना के लिए पूर्ण प्रमाण के रूप में उद्धृत किया जाता, और हमें सहमत होना होता। परन्तु सब्त के सच्चे पालन में पौलुस के इस उदाहरण के विरुद्ध कोई कौन-से संभावित तर्क प्रस्तुत कर सकता है?

फिर से, हम इन शब्दों में पौलुस के प्रथागत अभ्यास के बारे में पढ़ते हैं, "पौलुस अपनी रीति के अनुसार उनके पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्रशास्त्र में से उन से वाद-विवाद किया" (प्रेरितों के काम 17:2)। "और वह हर सब्त के दिन आराधनालय में वाद-विवाद करता, और यहूदियों और यूनानियों को समझाता था" (प्रेरितों के काम 18:4)।

अंत में, हम महान प्रेरित की व्यक्तिगत गवाही का हवाला देते हैं कि उसने अपने पूरे जीवन में कभी भी एक रविवार को पवित्र नहीं रखा। अपनी मृत्यु से ठीक पहले, पौलुस ने यहूदी अगुवों से सुस्पष्ट रूप से कहा,"मैं ने अपने लोगों के या बाप दादों के व्यवहारों के विरोध

में कुछ भी नहीं किया, तौभी बन्धुआ होकर यरूशलेम से रोमियों के हाथ सौंपा गया" (प्रेरितों के काम 28:17)।

एक पल के लिए सोचो! यदि पौलुस ने जानबूझकर सब्त को तोड़ा होता, या सातवें दिन के बजाय कोई और मनाया होता, तो वह सच्चाई से यह घोषित नहीं कर सकता था कि उसने यहूदी प्रथा के विरुद्ध कुछ भी नहीं किया है। निर्विवाद सत्यनिष्ठ व्यक्ति द्वारा इस अदक्ष घोषणा के बल पर, हम बाइबल में रविवार पालन के प्रमाण की खोज को बंद कर देते हैं। यह बस वहाँ है ही नहीं।

निःसंदेह हमारे धार्मिक दायित्व को पूरा करना बहुत आसान हो जाता। हमारे पास देश के अधिकांश महान धार्मिक संस्थानों,प्रोटेस्टेंट और कैथोलिक दोनों, का समर्थन और उदाहरण होगा।

लेकिन हम सबसे लोकप्रिय तरीके या सबसे सुविधाजनक तरीके की तलाश नहीं कर रहे हैं; हम बाइबिल के तरीके की तलाश कर रहे हैं। और हमने इसे पाया है। पूरी ईमानदारी से, हमें यह घोषित करना चाहिए कि परमेश्वर के महान हस्तलिखित कानून में आज्ञा से अलग दिन का पालन करने की प्रचलित प्रथा उस वचन के विपरीत है जो अंततः हमारा न्याय करेगा। कोई भी लोकप्रिय, बहुसंख्यक मत एक सादे "यहोवा तुझ से यों कहता है" की वजनदार गवाही को रद्द नहीं कर सकता है। हमें इस विषय पर अपने सिद्धांत के लिए अकेले बाइबल और बाइबल पर ही स्थिर होना चाहिए।

परमेश्वर का वचन घोषित करता है, "सातवां दिन तेरे परमेश्वर यहोवा के लिए विश्रामदिन है; उस में न तो तू किसी भाँति का काम-काज करना" (निर्गमन 20:10)। जब तक हमें बाइबल में कुछ संकेत नहीं मिलते कि परमेश्वर ने उस नैतिक कानून को वापस ले लिया,

जिसे उसने दुनिया के सामने इतनी भव्यता और शक्ति के साथ पेश किया, हम दस आज्ञाओं को आज भी प्रासंगिक और बाध्यकारी रूप में स्वीकार करेंगे। परमेश्वर ने वही कहा जो उसका मतलब था, और उसका मतलब वही था जो उसने कहा था।

कुछ लोगों का तर्क है कि इस प्रतिस्पर्धी, औद्योगिक समाज में जिसमें हमें जीविका अर्जित करनी है, परमेश्वर हमें चौथी आज्ञा से छूट देता है। यह निस्संदेह सच है कि शैतान ने आर्थिक दुनिया को सब्त के रक्षक के विशिष्ट नुकसान के लिए हेरफेर किया है, लेकिन परमेश्वर ने कभी भी असंभव की अपेक्षा नहीं की है। किसी भी कारण से परमेश्वर की एक भी आज्ञा को तोड़ना कभी भी आवश्यक नहीं है।

आप कह सकते हैं, "लेकिन मेरा नियोक्ता अपेक्षा रखता है कि मैं शनिवार को काम करूं, और मैं अपने परिवार को भूखा नहीं रहने दे सकता।" उस दुविधा का उत्तर हमारे प्रभु ने बहुत पहले पहाड़ी उपदेश में दिया था। उसने कहा, "परन्तु पहले तुम परमेश्वर के राज्य और उसके धर्म की खोज करो; और ये सब वस्तुएं तुझ में मिल जाएंगी" (मत्ती 6:33)। पिछला पद"इन वस्तुओं" को भोजन, कपड़े और नौकरी के रूप में परिभाषित करती है। यीशु हमें बस इतना कह रहा है कि यदि कभी उसकी आज्ञा मानने और हमारे नियोक्ता की आज्ञा मानने के बीच कोई विरोध होता है, तो हमें उसे पहले स्थान पर रखना चाहिए। भौतिक विचारों को कभी भी परमेश्वर की इच्छा पूरी करने से अधिक महत्वपूर्ण नहीं बनाया जाना चाहिए।

हर मामले में, परमेश्वर एक ऐसे मसीही विश्वासी के विश्वास का सम्मान करता है जो सब्त का पालन करने का निर्णय करता है, चाहे उसकी नौकरी का कुछ भी हो। कई बार परमेश्वर सब्त का पालन करने

वालों के लिए विशेष व्यवस्था करके चमत्कार करता है। कुछ मामलों में, वह अपने बच्चों को उनकी नौकरी खोने के द्वारा परखे जाने की अनुमति देता है, और फिर उनके विश्वास के जवाब में बेहतर नौकरियों को खोलता है। फिर भी, "वस्तुएं" हमेशा जोड़ दी जाती हैं जब हम उस पर भरोसा करते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, चाहे परिस्थितियां कुछ भी हों।

प्रभु के सब्त को रखने का असली रहस्य यह है कि सब्त के दिन के प्रभु को हमारे दिलों में रखा जाए! यह प्रेम ही है जो परमेश्वर के बच्चों को उसकी एक आज्ञा की अवज्ञा करने के बजाय मृत्यु को चुनने के लिए प्रेरित करता है। यीशु ने कहा, "यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानो" (यूहन्ना 14:15)। प्रेरित यूहन्ना ने प्रेम को इन शब्दों में परिभाषित किया, "क्योंकि परमेश्वर का प्रेम यह है, कि हम उसकी आज्ञाओं को मानें" (1 यूहन्ना 5:3)।

इस प्रकार, यह एक दिन का प्रश्न नहीं है जितना कि यह एक मार्ग का है-प्रेम के द्वारा आज्ञाकारिता का मार्ग, या प्रेम की कमी के द्वारा अवज्ञा का मार्ग। इसे चिह्नित करें और इसे कभी न भूलें! सब्त का पालन करना, निसंदेह रूप से सच्चा सातवाँ दिन सब्त, व्यर्थ में एक कार्य-विधि है यदि यह परमेश्वर के प्रति प्रेम और भक्ति से भरे हृदय से प्रवृत्त नहीं होता है। प्रेम के बिना, समस्त व्यवस्था पालन यांत्रिक और तकलीफदेह बन जाता है, परन्तु प्रेम से हर एक आज्ञा आनन्द और आनन्द का कारण बनती है। इस तरह के व्यक्तिगत प्रेम संबंध को अपने सब्त के पालन का आधार बनाएं, और यह आपके पूरे जीवन के लिए आपके सप्ताह का सबसे खुशी का दिन होगा!

अधिक मुफ़्त डिजिटल

पुस्तकें खोजें

AFTV.in/Free-Book-Library

हिन्दी, तमिल, तेलगु, कई भाषाओं में उपलब्ध है...

AMAZING FACTS
India

परमेश्वर का संदेश हमारा मिशन है

BOOKSTORE.AFTV.IN

पर जाएं जहां आप कई भाषाओं में मसीही सामग्री की खरीद कर सकते हैं और उन्हें आपके द्वार तक पहुंचाया जा सकता है!

AMAZING FACTS
India

हमारी मुफ़्त बाइबिल अध्ययन
पाठ्यक्रम को ना चूकें।
BibleStudy.AFTV.in
पर आज ही नामांकन करें!

कई अन्य मुद्दों पर सैद्धांतिक मतभेदों के बावजूद, अधिकांश ईसाई इस बात से सहमत हैं कि सब्त ईसाई जीवन का एक अभिन्न अंग है।

लेकिन हम किस दिन आराम करेंगे?

SabbathTruth.in

सब्त के बारे में वह सब कुछ जो आप जानना चाहते थे।

8 रहस्य

लम्बी और स्वस्थ जीवन के लिए!

यात्रा AmazingHealthFacts.in

अधिक जानने के लिए

अथवा

पत्रिका देखें

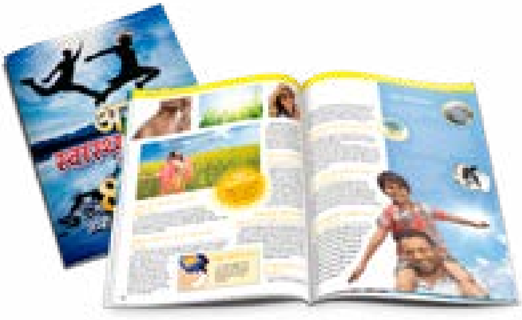

!निवेदन करें

AMAZING FACTS India
Post Box No. 51 • Banjara Hills,
Hyderabad, TS, 500034
www.AmazingFactsIndia.org